॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

ऑनलाइन संस्करण

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-१०

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रील गुरुदेवकी शतवार्षिकी-आविर्भाव-तिथिपूजाके उपलक्ष्यमें

श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके हरिकथामृत-सिन्धुका एक बिन्दु—

हरिकथाके श्रवणमात्रसे ही भक्तिराज्यमें सबकुछ प्राप्त होगा

(भाग-१)

[२२ अप्रैल, १९९४को श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरामें श्रीमद्भागवतम् दशम-स्कन्धपर प्रदत्त हरिकथासे उद्धृत—]

श्रील गुरुदेव—भगवान्‌को कैसे जाना जा सकता है? एकमात्र भगवान्‌की कृपासे ही भगवान्‌को जाना जा सकता है। वह कृपा कैसे प्राप्त होगी?

ज्ञानेप्रयासमुदपास्य नमन्त एव
जीवन्ति सन्मुखरितां भवदीयवार्त्ताम्।
स्थाने स्थिताः श्रुतिगतां तनुवाङ्मनोभि-
र्ये प्रायशोऽजित जितोऽप्यसि तैस्त्रिलोक्याम्॥

(श्रीमद्भा॰ १०/१४/३)

[इन्द्रियोंसे उत्पन्न ज्ञानके द्वारा भगवान्‌के स्वरूप-ऐश्वर्य और महिमाका विचार करनेका प्रयास परित्यागकर जो लोग अपने-अपने आश्रममें रहकर अथवा साधुओंके निकट रहकर साधुओंके मुखसे स्वतः उच्चारित अथवा उनके निकट रहनेके कारण स्वतः ही कानोंमें प्रवेश करनेवाले आपके(भगवान्‌के) नाम-रूप-गुण-लीला परायण वचनोंको अपने शरीर, मन और वाक्यों द्वारा सत्कार करते-करते जीवन धारण करते हैं, उन लोगोंके द्वारा अन्य कोई कर्म न किए जानेपर भी त्रिलोकमें अन्य व्यक्तियोंके द्वारा अजित आप भगवान् ऐसे लोगों द्वारा जीत लिए जाते हैं अर्थात् उनके वशीभूत हो जाते हैं।]

जो तीनों लोकोंके लिए अजेय हैं, वे क्या ज्ञानके प्रयास द्वारा जीत लिये जाएँगे? [यहाँ] ज्ञानके प्रयासका अर्थ क्या है? चित्तवृत्तिका निरोध। चित्तवृत्तिके निरोधका क्या अर्थ है? नैति, नैति, नैति। मायावादियों और अद्वैतवादियोंमें यही प्रधान विषय है—'यह ब्रह्म है? नहीं; यह ब्रह्म है? नहीं; यह ब्रह्म है? नहीं;—नहीं, नहीं करते-करते वे अन्ततक चले जाते हैं। इस प्रकारके ज्ञानके प्रयास द्वारा भगवान् वशीभूत नहीं होंगे। इसलिए कहा गया है—'ज्ञानेप्रयासमुदपास्य'—ज्ञान, ध्यान, होम, जप, तप—सबको छोड़ो। इनके प्रति विश्वास मत करो। यह तुमको ठग देंगे। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्ती ठाकुर इस श्लोककी टीकामें कहते हैं—'ईषदप्यकृत्वा'—ज्ञानके लिए तनिक भी प्रयास मत करो। कौन-सा ज्ञान? निर्विशेषज्ञान जो भक्तिका विरोधी है, केवल उसके लिए नहीं, अपितु तत्त्वज्ञानके लिए भी तनिक प्रयास मत

करो—कि श्रीकृष्ण भगवान् हैं, वे सच्चिदानन्दघन हैं, परब्रह्म हैं, उनके ये सभी अवतार हैं—यह सब भी छोड़ो। तत्त्वज्ञान भगवद्भक्तिका सहायक नहीं है। इसीलिए कहा गया है—'ज्ञानकर्मादि अनावृतम्' [भगवद्भक्ति ज्ञान-कर्मसे आवृत नहीं होनी चाहिए।] यहाँ तक कि जो तीर्थोंमें परिक्रमा करते हो उसको भी छोड़ो। तीर्थोंकी परिक्रमा द्वारा भी नहीं होगा। [अर्थात् भगवान् वशीभूत नहीं होंगे।]

भक्त—जैसे सनातन गोस्वामी प्रतिदिन परिक्रमा करते थे, तो क्या किसी अधिकारी व्यक्तिके लिए भी परिक्रमा द्वारा नहीं होगा।

श्रील गुरुदेव—यहाँ जो कहा गया है, उसके अनुसार अपना-अपना अधिकार समझना होगा कि किसका अधिकार है या नहीं।

भक्त—तत्त्वज्ञानके अनुशीलनके लिए क्यों मना किया गया है?

श्रील गुरुदेव—तत्त्वज्ञानके द्वारा श्रीकृष्णका कोई विलासरूप और उनके ऐश्वर्ययुक्त नारायणतत्त्वादिका कोई विचार आ सकता है, किन्तु कृष्णके बाल-गोपालरूप दधिचोर, माखनचोर, वनफूलमालासे विभूषित होकर घरोंमें चोरी करनेवाला मधुरभावोंसे युक्त कृष्णका रूप तत्त्वज्ञानके अनुशीलनसे नहीं आयेगा। तत्त्वज्ञानके द्वारा ऐश्वर्य-बुद्धि आ जाएगी।

भक्त—क्या सम्बन्धज्ञानकी आवश्यकता नहीं है?

श्रील गुरुदेव—किसी चीजकी आवश्यकता नहीं है। किसी चीजकी भी आवश्यकता नहीं है।

भक्त—क्या [कृष्णसे अपने] सम्बन्धज्ञानकी भी आवश्यकता नहीं है?

श्रील गुरुदेव—किसी चीजकी आवश्यकता नहीं है। यही तो यहाँ कहा

जा रहा है, कोई भी चीजकी आवश्यकता नहीं है। केवल [श्रद्धापूर्वक] हरिकथा सुननेकी आवश्यकता है, हरिकथाके द्वारा ही सबकुछ—तत्त्वज्ञान, सम्बन्धज्ञान, साधनभक्ति, भावभक्ति, प्रेमभक्ति जो कुछ भी है, वह सब प्राप्त होगा। अलगसे कोई प्रयास मत करो। अब इससे बढ़कर सम्बन्धज्ञान क्या हो सकता है यदि हम कृष्णके साथ यशोदा माताका चरित्र सुनें, कृष्णके साथ सखाओंका चरित्र श्रवण करें। समस्त सम्बन्धज्ञानका और समस्त तत्त्वज्ञानका तो यह चूड़ान्त है, इससे बढ़कर तत्त्वज्ञान अलगसे किस चीजसे होगा?

क्या तत्त्वज्ञान होगा [निर्विशेष]योगवाशिष्ठ पढ़नेसे या अन्य किसी चीजसे? इस श्रीमद्भागवतकी हरिकथाको जो प्रारम्भसे श्रवण करेंगे तो उसमें क्या बाकी रह जायेगा? इसलिए पृथकरूपसे कुछ करनेकी चेष्टा मत करो, अत्यन्त श्रद्धापूर्वक हरिकथाका श्रवण करो। ऐसी श्रद्धाको उत्पन्न करनेके लिए ही कह रहे हैं—'न तत प्रयासो कर्त्तव्यम्'—अलगसे किसी चीजके लिए प्रयास मत करो। हरिकथाके माध्यमसे ही सबकुछ प्राप्त होगा। हरिकथाको कैसे श्रवण(सेवन) करना होगा? 'नमन्त एव' (श्रद्धा और सत्कार सहित)।

https://www.facebook.com/srisribhagavatpatrika

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति – श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली